अवसर लागत सिद्धान्त की आलोचना

रिकार्डो के सिद्धान्त की तुलना में अवसर लागत निश्चित ही एक सुधार है क्योंकि इसमें अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों का विश्लेषण अधिक वैज्ञानिक एवं वास्तविक आधार पर किया गया है। यह सिद्धान्त यह भी स्पष्ट करता है कि रिकार्डो की अपेक्षा उत्पत्ति के किसी भी नियम के अन्तर्गत लागू हो सकता है जबकि रिकार्डो का सिद्धान्त केवल स्थिर लागत में प्रभावशील है। अवसर लागत सिद्धान्त का एक गुण यह भी है कि विदेशी व्यापार की जो सामान्य सन्तुलन की विचारधारा ओहलिन ने दी थी यह उसका एक सरल रूप है एवं ओहलिन की तुलना में विदेशी व्यापार में साधनों के प्रतिस्थापन की अधिक अच्छी व्याख्या करता है। यह सिद्धान्त यह भी स्पष्ट करता है कि लागतों में तुलनात्मक अन्तर होने का एक कारण बढ़ती हुई या घटती हुई लागतों का लागू होना है।

लेकिन इन गुणों के बावजूद अवसर लागत सिद्धान्त की आलोचना की गई। जिसमें सबसे प्रमुख नाम जेकब वाइनर का है। इस सिद्धान्त की निम्नलिखित आलोचना की जाती है।

① कल्याण के लिए अनुपयुक्त — वाइनर के अनुसार प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के वास्तविक लागत सिद्धान्त की तुलना में अवसर लागत की व्याख्या कल्याणकारी नीतियों का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ अर्थशास्त्रियों का मत है कि अवसर लागत का सिद्धान्त विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए उपयुक्त है तथा वास्तविक लागत सिद्धान्त कल्याण सम्बन्धी नीतियों के लिए अनुपयुक्त है।

② श्रमिकों की अधिमानों की अवहेलना — इस सिद्धान्त की दूसरी आलोचना इस आधार पर की जाती है यह सिद्धान्त आय के विरुद्ध श्रमिक के अधिमान को कोई महत्व नहीं देता है तथा समान मजदूरी प्रदान करने वाले दूसरे व्यवसाय के अधिमान पर भी विचार नहीं करता बल्कि यह मानकर चलता है कि श्रमिक विभिन्न व्यवसायों के प्रति तटस्थ रहता है और पारिश्रमिक पर विचार किये बिना श्रम करने को तैयार रहते हैं।

③ साधनों की मात्रा में परिवर्तन की अवहेलना — इस सिद्धान्त की यह आलोचना भी की जाती है कि यह उत्पत्ति के साधनों की पूर्ति को स्थिर मानकर चलता है किन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि साधनों के मूल्य का उनकी पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। वाइनर के अनुसार अवसर लागत वक्र उत्पत्ति के दिये हुए साधनों प्रयोग करने पर उत्पत्ति के अधिकतम सम्भव संयोगों को प्रदर्शित करती है। वास्तविक स्थिति में, उत्पादन का वास्तविक संयोग इस वक्र पर नहीं होगा वरन् इसके नीचे होगा यदि साधनों के उत्पादन की मात्रा पारिश्रमिक की दर पर निर्भर है और यदि

Scanned with CamScanner

पारिश्रमिक की तुलना पर जो कि वस्तु के आगे है तो उत्पत्ति का प्रत्येक साधन अपनी रुचि के अनुसार अधिकतम श्रम करने के लिए प्रोत्साहित करती है।"

(4) पूर्ण प्रतियोगिता की अवास्तविक मान्यता — अवसर लागत वक्र इस आधार पर खींचा जाता है कि वस्तुओं की बाजार एवं उत्पत्ति के साधनों में पूर्ण प्रतियोगिता विद्यमान रहती है, किन्तु वास्तविक जगत में अपूर्ण प्रतियोगिता रहती है।

(5) बाह्य कारकों की अवहेलना — अवसर लागत वक्र में बाह्य मितव्ययिताओं एवं अमितव्ययिताओं के प्रभाव की अवहेलना की जाती है जो उचित नहीं है। अवसर लागत की यह भी मान्यता है कि दीर्घकाल में उपभोक्ताओं की रुचि में कोई परिवर्तन नहीं होता पर यह भी उचित नहीं है।

परन्तु अवसर लागत की जो भी आलोचनाएं की गयी हैं वे सब सही नहीं हैं।

यह कहना सही नहीं है कि अवसर लागत की व्याख्या से कल्याण सम्बन्धी निष्कर्षों को ज्ञात नहीं किया जा सकता है। सेम्युलसन ने अवसर लागत की व्याख्या कर यह स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी व्यापार न करने की तुलना में एक देश कोई न कोई व्यवसाय कर अपने कल्याण में वृद्धि करता है। कोनस के अनुसार "सेम्युअलसन की व्याख्या ने कल्याण एवं विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में वास्तविक लागत और अवसर लागत के बीच में जो खाई थी उसे पाट दिया है।"

जहां तक आय की तुलना में आराम के अधिमान का प्रश्न है यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अवसर लागत का सिद्धान्त इस प्रश्न पर भी विचार करता है। प्रो० वाइनर ने दो आयामी अवसर लागत वक्र का विस्तार कर उसे तीन आयाम के रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें आराम को तीसरी वस्तु के रूप में बताया गया है अतः उत्पादन लागत को या तो परित्याग किये गये आराम या परित्याग किये गये वैकल्पिक उत्पादन के रूप में मापा जा सकता है।

यह कहना भी उचित नहीं है कि अवसर लागत विश्लेषण के अन्तर्गत उत्पत्ति के साधनों में होने वाले परिवर्तन पर विचार नहीं किया जा सकता है। सामान्य तौर पर अवसर लागत वक्र का निर्माण साधनों की स्थिर पूर्ति की मान्यताओं पर आधारित है, किन्तु वाइनर ने यह सिद्ध कर दिया है कि अवसर लागत सिद्धान्त में उन परिवर्तनों का समावेश भी किया जा सकता है जो वस्तु कीमतों के अनुपात में और साधन की सीमान्त उत्पादकता में परिवर्तन के फलस्वरूप पैदा होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अवसर लागत सिद्धान्त ने रिकार्डो के सिद्धान्त के दोष को दूर कर महत्वपूर्ण कार्य किया है और उत्पत्ति के साधनों के सम्बन्ध में एक गतिशील धारणा प्रस्तुत की है।

x

Scanned with CamScanner